DOI: 10.51220/hjssh.v6i1.12

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 6 pp.87 - 89 , December, 2011, ISSN. 0975 - 9891

उत्तराखण्ड के आदि मूल-अनार्य

अजय पाल सिंह नेगी

मानव शास्त्र विभाग हे0न0ब0 केन्द्रीय विश्व विद्यालय श्रीनगर गढ़वाल

Received: 04-09-2011 **Revised:14-9-2011** **Accepted:11-10-2011**

ABSTRACT

"हिमालयी जीवन की हम बात करें तो आदि काल का पूरा जनमानस एक रहस्य भरी संस्कृति लिये हुए अपना जीवन यापन करता था, जो कि सम्पूर्ण हिमालय का एक सामाजिक अंग था। हिमालय जीवन की संघर्ष पूर्ण परिस्थिति, घना जंगल, नदियाँ, ग्लेशियर, बेबाक खड़ी-खड़ी विशाल चट्टानें जो एक रहस्यपूर्ण अडिगता को लिए हुए, एक खामोश चुप्पी के साथ 'साधक' की तरह खड़ा हुआ विहगंम तरीके से आकाश व धरती के साथ आत्मसात किये हुए, सम्पूर्ण जगत को चुनौती देते हुए अपनी इस विशालता को आज भी दर्शाता है।"

Keywords: उत्तराखण्ड, अनार्य संस्कृति

भू-गर्भ विशेषज्ञों की हम बात करें तो उनका कहना है कि हिमालय पहले समुद्र था। फिर उसमें परिवर्तन हुआ। फिर हिमालय में जन-जीवन आया। भू-विशेषज्ञों के आधार पर उत्तराखण्ड हिमालय की उम्र 2.5 विलियन तथा 1.8 विलियन की बीच की है। उनके अनुसार धरती का निर्माण 6 विलियन तथा 4 विलियन के बीच माना गया है।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार इतिहासकारों ने विश्व की दो सभ्यताओं पर प्रकाश डाला है।

1. नील नदी की सभ्यता
2. सिन्धु नदी की सभ्यता

उनका विवेचन यह है कि सभ्यताऐं हमेशा नदी व जल स्रोत के किनारे हुई हैं। इन दोनों सभ्यताओं के प्रमाण आज भी देखने को मिलते हैं इसकी हम अनदेखी नहीं कर सकते हैं। अब सवाल यह उठता है कि उसके बाद जन-जीवन की शुरूआत कैसे हुई।

मानव शास्त्रीय दृष्टिकोण के आधार पर उस समय के देवी-देवताओं के मूर्तियों को समझकर सांस्कृतिक आंकलन किया गया। जैसे-'सूर्य पूजा' का प्रचलन प्राचीन रोम में था, जो कि आज मिश्र कहलाता है, उनके पूर्वज अपने को 'सूर्य पुत्र' मानते थे। वैसे ही दूसरी सभ्यता में देव में 'शिव' व कुछ देवी की भंजक मूर्तियां मिली हैं, जो कि उस काल की शिव पूजन को दर्शाते थे। यह काल ऋगवैदिक काल के समकक्ष माना जाता है, अन्वेषणकाल हमेशा बाद का माना जाता है। ऋगवैदिक काल में दो महाकाव्यों की रचना हुई, 'रामायण' व 'महाभारत' जिनको हम दो समय सारणियों में बांध सकते हैं। पूर्व वैदिक काल व

©SHARAD

उत्तर वैदिक काल। इस काल में आर्यन संस्कृति की उद्गमता है। वे कैसे मध्य एशिया से भारत में आये तथा फिर उनका विस्तार हिमालय जन-जीवन में हुआ। हिमालय संस्कृति को भौगोलिक आधार पर पांच भागों में बांटा गया है।

1. केदारखण्ड (वर्तमान नाम उत्तराखण्ड)
2. मानसखण्ड (वर्तमान नाम उत्तराखण्ड)
3. पशुपतिनाथ (नेपाल क्षेत्र)
4. जालन्धर (पंजाब)
5. जम्मू-कश्मीर

केदारखण्ड उत्तराखण्ड का प्राचीन नाम है। केदार शब्द का अर्थ होता है 'जल' इसकी कल्पना कहीं न कहीं से समुद्र को दर्शाती है।[1] भू-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पृथ्वी 65 प्रतिशत जल रहित है। विज्ञान जहाँ पर खत्म होता है वहाँ पर आध्यात्मिकता शुरू हो जाती है। अब सवाल यह उठता है कि यहाँ पर प्राचीन (ऋगवैदिक काल से पहले) मूल निवासी कौन थे। प्राचीन ग्रन्थ स्कन्द पुराण में केदारखण्ड को शिव-पार्वती का क्रीड़ा स्थल माना गया है।[2] प्रख्यात विद्वान कालीदास ने भी अपने ग्रन्थों में इन तथ्यों का वर्णन किया है। वैसे भी कोई भी परिवार बिना प्रजा के या सामाजिकता के बिना नहीं रह सकता है।

इतिहासकारों व साहित्यकारों, चिन्तकों ने भी यह माना है कि ऋगवैदिक संस्कृति से पहले यहाँ पर कुछ घोर बर्बर जातियाँ थीं, जो यहाँ की संघर्ष पूर्ण व रहस्य भरी भौगोलिक परिस्थिति से भली-भाँति परिचित थे। वे 'अनार्य' लोग थे, जो निम्न जातियाँ नामों से सम्बोधित थे।

1. कोल
2. भील
3. किरात
4. सन्थाल
5. तंगण
6. परतंगण

वे हमेशा अश्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित रहते थे। (हिमालयन पुरातत्वकालीन समय पर अश्त्र-शस्त्रों का उल्लेख मिलता है) उनको उस काल में दस्यु भी कहा गया है। जो कि बाद में आर्यन संस्कृति के सत्ता सीन होने बाद 'दास' के रूप में परिवर्तित हुए।[3]

अनार्य संस्कृति ने रामायण काल को तथा महाभारत काल को भी अपने रण कौशल से प्रभावित किया। केदारखण्ड में इसका विवरण मिलता है-अर्जुन का किरातों से बिल्लव केदार नामक स्थान पर युद्ध तथा किलकिल्लेश्वर नामक स्थान पर भीलों से युद्ध, इत्यादि। अनार्य संस्कृति शैव परम्परा से आत्मसात् किये हुए थी, उनके गणपति शिव थे। अनार्यों का यहां पर एक छत्र राज्य था। वे आखेट प्रिय भी थे, उनका

संगीत-ताल व सभी वाद्य यंत्र जानवरों के खाल के बने होते थे। उनका शासन काल प्राचीनता से लेकर आर्यन के आगमन तक रहा। आर्यों के साथ उनका काफी समय तक संघर्ष रहा, बाद में आर्यन संस्कृति के प्रभाव में आकर वे लोग उनके अधिकृत रहने लगे, उस काल की शैव परम्परा अनार्य संस्कृति से आर्यन संस्कृति में आयी। आज भी उत्तराखण्ड (केदारखण्ड व मानसखण्ड प्राचीन नाम) में अनार्य संस्कृति के भग्नावेश देखने को मिलते हैं।[4]

सन्दर्भ

1. स्कन्ध पुराण से
2. पं0 हरिकृष्ण रतूड़ी (गढ़वाल का इतिहास)
3. श्री भजन सिंह 'भजन'
4. डा0 गोविन्द चातक